एक छोटा-सा प्रयोग

महेश प्रजापति

विषय शिक्षण को प्रभावी और रुचिकर बनाने की क्या युक्तियां हों, इसके लिए बहुत-सी युक्तियां शिक्षक प्रशिक्षणों में सुझाई जाती हैं। स्व-प्रेरणा के अभाव में शिक्षक इन युक्तियों का समुचित प्रयोग नहीं कर पाते। लेकिन यदि शिक्षक स्वयं अपनी प्रेरणा और प्रयासों से ऐसी युक्तियों की तलाश करने लगता है तो वे ज्यादा प्रभावी और स्थायी होती हैं। इस अनुभव परक लेख में एक शिक्षक द्वारा भाषा शिक्षण में किए गए प्रयासों और उससे बच्चों के सीखने पर पड़ने प्रभावों को प्रस्तुत किया है।

भाषा शिक्षक होने के साथ-साथ साहित्य में मेरी गहरी रुचि रही है। साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का पठन मेरा प्रिय शौक है। बात इसी जून की है। मैं भारतीय भाषा परिषद द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'वागर्थ' पढ़ रहा था। पत्रिका में हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार रमेश उपाध्याय की डायरी के कुछ अंश छपे थे। एक जगह उन्होंने अपनी कहानी 'शापमुक्ति' की चर्चा की थी। मैं रमेश उपाध्याय से परिचित नहीं था परन्तु यह कहानी विगत तीन-चार वर्ष से अपने विद्यार्थियों को पढ़ा रहा था। पता नहीं मुझे क्या सूझा, मैंने रमेश उपाध्याय जी को पत्र लिख दिया कि मैं अपने विद्यार्थियों का दूरभाष पर आपकी कहानी 'शापमुक्ति' के संबंध में एक संवाद कराना चाहता हूं। आपकी क्या राय है ? कृपया लिखें। लगभग महीने भर बाद मुझे रमेश जी का पत्र मिला कि वे कहानी पर मेरे विद्यार्थियों से बात करने हेतु सहर्ष इच्छुक हैं। मैंने फोन पर उनसे कार्यक्रम तय किया और निश्चित समय पर छात्र-छात्राओं की 'शापमुक्ति' कहानी पर लेखक से बात करवाई। कहानी पर छात्र छात्राओं ने अपने-अपने प्रश्न पूछने शुरू किए। प्रश्न कुछ इस प्रकार थे प्रश्न कुछ इस प्रकार थे

- आपने कहानी का नाम शापमुक्ति ही क्यों रखा ?
- कहानी के प्रमुख पात्र (डॉ. प्रभात) को इलाहबाद में रहना बताया गया है। क्या आप इलाहाबाद में रहते हैं ?
- सुना है आपकी शिक्षा राजस्थान में हुई है, आप कहां पढ़ते थे ?
- क्या आप बच्चों के लिए अब भी लिखते हैं ?
- आपकी कहानियां किन-किन पत्रिकाओं में छपती हैं ?
- हम विद्यालय में आपको बुलाना चाहते हैं। क्या आप आयेंगे ? इत्यादि।

रमेश उपाध्याय जी ने बड़े धैर्य से बच्चों के प्रश्नों के उत्तर दिए। लगभग तीस मिनिट तक यह संवाद चला। विद्यालय के दो-तीन शिक्षक भी मेरी कक्षा में आ गए थे। इस नवाचार ने विद्यार्थियों और शिक्षकों को तो प्रभावित किया ही, कहानीकार रमेश उपाध्याय भी इससे प्रभावित हुए। उन्होंने उसी दिन अपने अनुभव पर एक संक्षिप्त लेख लिखकर 'जनसत्ता' में भेज दिया। 13 अगस्त के अंक में यह लेख 'एक

लेखक परिचय :

जवाहर नवोदय विद्यालय में हिन्दी के अध्यापक

सम्पर्क :

बी-17, जवाहर नवोदय विद्यालय, हुरडा, भीलवाड़ा
पिन - 311022 (राजस्थान)

अद्‌भुत संवाद' शीर्षक से छपा जिसमें लेखक ने अपने अनुभव की चर्चा की और इस नवाचार की प्रशंसा भी की। इसके पश्चात् मुझे कुछ प्रशंसकों के पत्र भी मिले जो 'जनसत्ता' में प्रकाशित उक्त लेख को पढ़कर लिखे गए थे।

सच कहूं तो मैं इस अनुभव से इतना उत्साहित हुआ कि कक्षा - शिक्षण में नवाचार मेरे लिए अनिवार्य-सा हो गया। तब मैंने इसे ठोस और व्यवस्थित रूप दिया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाः 2005 में सुझाए गए दिशा निर्देशों के अनुरूप मैंने दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित साहित्यकारों से विद्यार्थियों के संवाद की शृंखला शुरू की और इसके तहत प्रसिद्ध कथाकार मन्नू भंडारी तथा कवि मंगलेश डबराल से छात्र-छात्राओं का संवाद कराया जा चुका है। मन्नू भण्डारी से उनकी आत्मकथा 'एक कहानी यह भी' के बारे में कक्षा दस के विद्यार्थियों से हुआ संवाद लम्बा था। लगभग एक घंटा दस मिनट यह संवाद चला। जिसमें छात्र-छात्राओं ने उनसे निम्न सवाल पूछे

- आप भानपुरा (लेखिका का जन्म स्थान) से अजमेर क्यों आए ?
- आपकी प्राथमिक शिक्षा कहां हुई ?
- आपने लेखन की शुरूआत कब की ?
- आपकी पहली रचना छपने पर आपका अनुभव कैसा रहा ?
- आपने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की ? क्या कोई ऐसा अनुभव है जब आपको ब्रिटिश सरकार के दमनचक्र का सामना करना पड़ा हो ? इत्यादि।

फिर विद्यालय के कुछ शिक्षकों ने भी लेखिका से कुछ सवाल पूछे। यथा, आज साहित्यिक रचनाओं के पठन में विद्यार्थियों की रुचि लगातार कम होती जा रही है इसके क्या कारण है ? कुछ सवाल स्त्री-विमर्श पर भी पूछे गए। बच्चों की पूरी सहभागिता ऐसे प्रश्नों में रही। मन्नू भंडारी से हुआ यह वार्तालाप इतना रुचिकर और सार्थक रहा कि कई विद्यार्थियों ने लेखिका का बहुत-सा साहित्य पढ़कर उन्हें पत्र भी लिखे।

उक्त साहित्यकारों से हुए संवाद को मैंने 'रिकॉर्ड' किया और सहायक सामग्री के रूप में एक 'आडियो कैसेट' का निर्माण किया। 'संवाद' शीर्षक की इस कैसेट का दसवीं कक्षा हेतु हिन्दी विषय की सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। नवाचार के उक्त कार्यक्रम के तहत मैंने विद्यालय प्रशासन की ओर से, पाठ्यक्रम में सम्मलित हिन्दी कथाकार स्वयं प्रकाश को आमंत्रित किया है। स्वयं प्रकाश जी ने जनवरी, 2008 में विद्यालय आने की स्वीकृति प्रदान की है। आशा है यह कार्यक्रम भी सार्थक रहेगा।

उक्त अनुभव से जो एक बात स्पष्ट हुई वह यह कि कक्षा-शिक्षण के अंतर्गत किया गया नवाचार न सिर्फ उसकी गुणवत्ता में वृद्धि करता है अपितु विद्यार्थियों व शिक्षक की सोच और जीवन में दूरगामी परिवर्तन कर सकता है। जैसे, इस संवाद से पहले मेरी कक्षा के छात्र-छात्राओं की किसी रचनाकार से बातचीत नहीं हुई थी और किसी बड़े व्यक्ति के प्रति उनके मन में स्वाभाविक संकोच था। परन्तु जब उन्होंने बातचीत की और सभी रचनाकारों ने उनसे बहुत सरलता, स्नेह और आत्मीयता से बातचीत की तो उनके मन का संकोच कम हुआ। अब कक्षा के विद्यार्थियों की ऐसे आयोजन में रुचि बढ़ी है। वह विद्यालय में आने वाली साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं को पढ़कर मुझसे चर्चा करते हैं। इस तथा अन्य नवाचारों से मेरे कुछ विद्यार्थी इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भाषा, साहित्य या मानविकी विषयों में ही 'कैरियर' बनाने की इच्छा प्रकट की। यह संभव है कि अपरिपक्व अवस्था में लिया गया उनका निर्णय आगे बदल भी सकता है परन्तु मैं सर्वथा निराश भी नहीं हूं। जिन साहित्यकारों से संवाद करने का मुझे अवसर मिला उनमें से कुछ से मेरे स्थाई संबंध बन गए जिनके प्रभाव से मैं लेखन की ओर और तत्परता से अग्रसर हुआ और आज मुझे अपने लेखन के संबंध में उनके अमूल्य सुझाव मिलते हैं।

नवाचार के संबंध में स्पष्ट हुई कुछ बातें यहां रखना चाहूंगा। प्रथम, पुस्तकों से पढ़कर या कहीं से नकल करके किया गया नवाचार उतना प्रभावी नहीं होता जितना कि शिक्षक के स्वयं के मस्तिष्क की उपज से उभरा हुआ विचार प्रभावी होता है। दूसरे, कक्षा-शिक्षण में प्रयोग की गई छोटी से छोटी युक्ति जो शिक्षण को आह्लादकारी बना सके नवाचार कहलाने योग्य है। तीसरे, नवाचाार करने वाले शिक्षक को विद्यार्थी समर्पित व निष्ठावान शिक्षक के रूप में ग्रहण करते हैं। चौथे, भारत जैसे विशाल देश के सुदूर ग्रामीण अंचल के विद्यालयों, जहां विषय विशेषज्ञों को बुलाना संभव नहीं है या मुश्किल है, वहां संचार के नवीनतम साधनों का इस्तेमाल करके शिक्षण को और गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सकता है। सच कहूं नवाचार आज मेरे शिक्षण का अनिवार्य अंग बन चुका है। पाठ्यक्रम में सम्मिलित कहानियों व कविताओं का नाट्य रूपान्तरण कर उनका अभिनय कराना, टेपरिकॉर्डर के सामने विद्यार्थियों का मुखर वाचन करवाकर उनकी उच्चारण संबंधी त्रुटियों का निवारण करना, स्थानीय शैक्षणिक भ्रमण के आयोजन, श्रव्य-दृश्य सामग्री तथा मल्टीमीडिया के उपयोग द्वारा शिक्षण को रुचिकर, प्रभावी और सार्थक बनाना मेरे शिक्षण की अनिवार्यता बन चुकी हैं।

वस्तुतः यह मैंने अपने अनुभव से ही सीखा है कि नवाचार शिक्षण की अनिवार्य विशेषता होनी चाहिए। यह न सिर्फ अधिगम को रुचिकर और सुगम बनाता है अपितु व्यापक शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति में भी सहायता करता है। भाषा-शिक्षण के संबंध में तो नवाचार की असीम संभावनाएं हैं। बस जरूरत है शिक्षक के लगातार सक्रिय और ऊर्जावान होने की। ◆